IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, March 2023
Impact Factor: 7.301

जैन, बौद्ध तथा गांधी दर्शन का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव : एक तुलनात्मक अध्ययन

लालबिहारी कुशवाहा एवं प्रो. श्रीकान्त मिश्र
एम. ए./नेट/शोधार्थी प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, दर्शन विभाग
अ. प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश–

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में मध्य गंगा के मैदानों में तत्कालीन सामाजिक संकीर्णता के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में जन्मे जैन संप्रदाय ने अपनी समाज सुधार प्रवृत्ति, अपने सिद्धांतों एवं दर्शन से तत्कालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति को व्यापक रूप में प्रभावित किया। समाज में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य के कालजयी सिद्धांत के माध्यम से भारतीय समाज में जो क्रांति हुई उसने भारतीय समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया। भारतीय धर्म, कला, स्थापत्य, साहित्य, भारत का खान–पान कोई भी ऐसा क्षेत्र ना हुआ जिसको जैन धर्म ने प्रभावित ना किया हो। बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति को व्यापक रूप में प्रभावित किया। हमारे भारत देश में बौद्ध धर्म के अनुयाई बहुत ही कम हैं और बौद्ध धर्म भारत में लगभग लुप्त हो ही गया है। लेकिन इस धर्म के प्रभाव में आज भी भारतीय संस्कृति में दृष्टिगोचर होता है। भारत में अहिंसा, सहिष्णुता, परोपकार, दया, मानव कल्याण की भावनाओं को विकसित करने का श्रेय बौद्ध धर्म को ही जाता है। बौद्ध धर्म प्राचीन काल से हमारे भारत का राष्ट्रीय धर्म रहा है। अतः इस धर्म में हमारे भारतीय संस्कृति को बहुत कुछ प्रदान किया है। आधुनिक भारतीय चिंतन प्रवाह में गांधी के विचार सार्वकालिक हैं, वे भारतीय उदात्त सामाजिक–सांस्कृतिक विरासत के अग्रदूत भी हैं और सहिष्णुता, उदारता और तेजस्विता के प्रमाणिक तथ्य भी. सत्यशोधक संत भी और शाश्वत सत्य के यथार्थ सामाजिक वैज्ञानिक भी. राजनीति, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, विज्ञान और कला के अद्‌भुत मनीषी और मानववादी विश्व निर्माण के आदर्श मापदण्ड भी। सम्यक प्रगति मार्ग के चिह्न भी और भारतीय संस्कृति के परम उद्‌घोषक भी। गांधी के लिए वेद, पुराण एवं उपनिषद का सारतत्व ही उनका ईश्वर है और बुद्ध, महावीर की करुणा ही उनकी अहिंसा. सत्य, अहिंसा, ब्रहमचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, आस्वाद, अभय, सर्वधर्म समानता, स्वदेशी और समावेशी समाज निर्माण की परिकल्पना ही उनका आदर्श रहा है। गांधी के आदर्श विचार उनके निजी जीवन तक ही सीमित नहीं रहे, उन विचारों का भारतीय समाज व संस्कृति पर जो प्रभाव पड़ा वह अनेक रूपों में दिखाई पड़ता है।

बीज शब्द– दर्शन, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, गांधीवाद, भारतीय समाज, संस्कृति, पंचमहाव्रत, आष्टांगिक मार्ग, एकादश व्रत आदि।

भूमिका

गंगा घाटी के नवीन विकसित समाज में भौतिक सुख–सुविधाओं एवं भोग विलास की प्रवृत्ति विद्यमान थी। जैन एवं बौद्ध संप्रदाय ने इसका विरोध किया तथा अपने अनुयायियों को संयमित जीवन के लिये पंचव्रत –सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य का सिद्धांत, गौतम बुद्ध ने पंचशील, आष्टांगिक मार्ग दिया। जिसका प्रभाव पूरे भारतीय समाज में पड़ा। गांधी जी ने आधुनिक युग में इन सिद्धांतों का पुनर्जीवन दिया अपने जीवन में उन्हे जीवित किया।

जैनियों का मानना है कि संपूर्ण विश्व प्राणवान होता है। अहिंसा जैन धर्म दर्शन का केंद्रबिंदु है। इसी कारण जैन धर्म में युद्ध और कृषि दोनों वर्जित है क्योंकि दोनों में जीवों की हिंसा होती है। इसके परिणामस्वरूप तत्कालीन भारतीय समाज में व्यापार एवं वाणिज्य की व्यापक वृद्धि हुई। जैन धर्म में तत्कालीन जन्ममूलक वर्ण व्यवस्था एवं वैदिक कर्मकांडों का विरोध किया गया। जैन तीर्थंकरों ने कर्म के महत्त्व पर बल दिया। महावीर के अनुसार पूर्व जन्म में अर्जित पुण्य या पाप के अनुसार ही किसी का जन्म उच्च या निम्न जाति में होता है। महावीर के मत में युद्ध और अच्छे आचरण वाले निम्न जाति के लोग भी मोक्ष पा सकते हैं। उनके अनुसार चांडालों में भी अच्छे गुणों का होना संभव है। मोक्ष के लिये जैनियों ने कर्मकांडीय अनुष्ठान की आवश्यकता को नकारा तथा समयक् ज्ञान, सम्यक् ध्यान और सम्यक् जैसे आचरण पर बल दिया। जैनियों ने तत्कालीन समाज में विशेषाधिकारों का दावा करने वाले ब्राह्मणों द्वारा संपोषित संस्कृत भाषा का परित्याग किया और धर्मोपदेश के लिये आम लोगों की बोलचाल की प्राकृत भाषा को अपनाया। इस कारण प्राकृत भाषा और साहित्य की समृद्धि हुई। जैन लोगों द्वारा प्राचीन भारत की कला को व्यापक रूप में प्रभावित किया गया, जैसे– तीर्थंकरों की पूजा के लिये राजस्थान, कर्नाटक, गुजरात और मध्य प्रदेश में विशाल प्रस्तर प्रतिमाओं का निर्माण करवाया गया।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, March 2023
Impact Factor: 7.301

बौद्ध धर्म प्राचीन काल से हमारे भारत का राष्ट्रीय धर्म रहा है। अतः इस धर्म में हमारे भारतीय संस्कृति को बहुत कुछ प्रदान किया है। आधुनिक भारतीय चिंतन प्रवाह में गांधी के विचार सार्वकालिक हैं, वे भारतीय उदात्त सामाजिक–सांस्कृतिक विरासत के अग्रदूत भी हैं और सहिष्णुता, उदारता और तेजस्विता के प्रमाणिक तथ्य भी. सत्यशोधक संत भी और शाश्वत सत्य के यथार्थ सामाजिक वैज्ञानिक भी. राजनीति, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, विज्ञान और कला के अद्‌भुत मनीषी और मानववादी विश्व निर्माण के आदर्श मापदण्ड भी। सम्यक प्रगति मार्ग के चिह्न भी और भारतीय संस्कृति के परम उद्‌घोषक भी। गांधी के लिए वेद, पुराण एवं उपनिषद का सारतत्व ही उनका ईश्वर है और बुद्ध, महावीर की करुणा ही उनकी अहिंसा. सत्य, अहिंसा, ब्रहमचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, आस्वाद, अभय, सर्वधर्म समानता, स्वदेशी और समावेशी समाज निर्माण की परिकल्पना ही उनका आदर्श रहा है। गांधी के आदर्श विचार उनके निजी जीवन तक ही सीमित नहीं रहे, उन विचारों का भारतीय समाज व संस्कृति पर जो प्रभाव पड़ा वह अनेक रूपों में दिखाई पड़ता है।

इस प्रकार जैन, बौद्ध, एवं गांधी दर्शन मानवता को महत्त्व देने वाला उपयोगी दर्शन हैं। अपने समाज एवं धर्म सुधार आंदोलन की प्रवृत्ति के कारण इन तीनों दर्शन ने समकालीन भारतीय समाज को गहरे स्तर पर प्रभावित किया।

जैन धर्म का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव–

1. भारतीय दर्शन में प्रभाव–

जैन धर्म ने भारतीय दर्शन के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैन धर्म में अनेक नए सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जो मौलिक थे। उदाहरण के लिए जैन धर्म के स्यादवाद को लिया जा सकता है। स्यादवाद का अर्थ सभी दृष्टिकोण से देखने पर सत्य के रूप देखे जा सकते हैं। इनमें हर विचार सत्य ही व्यक्त करता है। स्यादवाद के अतिरिक्त अनेक मौलिक सिद्धांतों को जैन धर्म में भारतीय संस्कृति को प्रदान किया। इसके विषय में अनेकांतवाद का सिद्धांत बहुचर्चित है।

2. सामाजिक प्रभाव–

जैन धर्म की सामाजिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण देन है। जैन धर्म को आश्रय देने वाले राजाओं ने समाज के निर्धन वर्ग के लिए अनेक औषधि घर और विश्रामालय और पाठशालाओं का निर्माण कराया। जहां निशुल्क दवाइयां ठहरने की सुविधा और शिक्षा की व्यवस्था उपलब्ध कराई। इससे समाज के अन्य वर्गों में भी निर्धनता के प्रति दया भाव व दान देने की भावना जागृत हुई। इसके अलावा जैन धर्म में स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए भी प्रयास किया। इस उद्देश्य से उन्हें जैन संघ में रहने वाले जैन शिक्षाओं का पालन कर मोक्ष प्राप्त करने का भी अधिकार जैन धर्म के द्वारा ही किया गया था।

महावीर के समय में जाति प्रथा प्रचलित थी और समाज में ऊंच–नीच हुआ छुआछूत की भावनाएं थी। इस कारण निम्न वर्ग की स्थिति सोचनीय थी। जैन धर्म ने ना केवल जाति प्रथा का विरोध किया बल्कि सभी व्यक्तियों को एक समान बताया। जैन धर्म के द्वारा जाति प्रथा का विरोध करने के कारण ब्राह्मणों की शक्ति कम होने लगी व सामाजिक समानता की भावना अच्छी होने लगी। जिससे शूद्रों (निम्न वर्ग) की स्थिति में सुधार हुआ। जैन ग्रंथ में वर्णन है कि मालिकों को अपने दास, दासियों, कर्मचारियों का अच्छी तरह से सेवा करना चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा से समाज में निम्न वर्ग और दासों के प्रति उदारता एवं सहृदयता के भाव जागृत हुए जिसका सीधा प्रभाव उनकी सामाजिक स्थिति पर पड़ा।

3. धार्मिक प्रभाव

जैन धर्म ने ब्राह्मण धर्म की बुराइयों की आलोचना भी की। अतः ब्राह्मणों को भी उनके धर्म में उपस्थित बुराइयों व कुरीतियों का ज्ञान हुआ। ब्राह्मणों को अपने धर्म को बनाए रखने के लिए यह जरूरी हो गया कि वह अपने धर्मों में सुधार कर लें। अतः जैन धर्म के कारण ब्राह्मण धर्म पहले की अपेक्षा अधिक सरल हो गया।

4. साहित्यिक प्रभाव–

जैन धर्म के द्वारा लोक भाषा में साहित्य की रचना की गई। लोक भाषा को समृद्ध बनाने में जैन धर्म का महत्वपूर्ण योगदान है। जैन धर्म के मूल धार्मिक ग्रंथों में 12 अंग 11 उपांग 10 पैन्न 5 मूलसूत 1 नंदीसूत और 7 छयसूत भी प्राकृत भाषा में है। कुछ धार्मिक ग्रंथों की रचना अपभ्रंश भाषा में हुई है। दक्षिण भारत के साहित्य में भी जैन धर्म का अत्यधिक प्रभाव है। दक्षिण भारत में जैन धर्म के प्रचार हेतु कन्नड़, तमिल, तेलुगु और अन्य भाषाओं में भी जैन ग्रंथों की रचना की गई। जैन धर्म के विद्वानों ने ना केवल धार्मिक व दर्शनिक रचनाओं का सृजन किया बल्कि उन्होंने व्याकरण काव्य और गणित आदि पर भी अनेक ग्रंथों की रचना की। गुप्त काल में संस्कृत भाषा के अधिक लोकप्रिय होने के कारण जैन विद्वानों ने अपने धर्म ग्रंथों की संस्कृत में भी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, March 2023
Impact Factor: 7.301

रचना की। 11वीं शताब्दी में हेमचंद्र सूरी नामक जैन विद्वान में संस्कृत में ही अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ का सृजन किया। सभी जैन साहित्यकारों में हरीभद्र सिद्ध सेन आदि के नाम बहुचर्चित है। इनमें से सबसे ऊंचा स्थान हेमचंद्र सूरी का ही है।

5. कला के क्षेत्र में प्रभाव–

जैन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा भारतीय साहित्य को समृद्ध बनाया। जैन कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों के द्वारा भारतीय कला के क्षेत्र में बहुत वृद्धि की। जैन धर्म के अनुयायियों ने अपने धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए पूज्य तीर्थ कारों की स्मृति को स्थाई बनाए रखने के उद्देश्य से मंदिरों, स्तूपों, मठों, रेलिंगों, प्रवेशद्वार, स्तंभों, गुफा व मूर्तियों का निर्माण कराया। दूसरी सदी में जैन धर्म के प्रचार के लिए हाथीगुम्फा नामक गुफाओं में अनेक कलाकृतियों का निर्माण किया गया। इसके अलावा राजगृह, पावापुरी, पार्श्वनाथ, पर्वत, सौराष्ट्र राजस्थान और मध्य भारत में अनेक जैन मंदिरों व मूर्तियों का निर्माण कराया। राजस्थान में आबू पर्वत पर तथा बुंदेलखंड खजुराहो ने 11वीं शताब्दी में निर्मित मंदिर वस्तु कला एवं मूर्तिकला के अद्भुत नमूने हैं। दक्षिण भारत में श्रवणबेलगोला के निकट 70 फुट ऊंची गोमतेश्वर मंदिर व बड़वानी में 84 फुट ऊंची जैन तीर्थंकर की प्रतिमा दर्शनीय है। इन प्रतिमाओं का निर्माण विशाल चट्टानों को काटकर किया गया है। इसके अलावा जैन धर्मावलंबियों के द्वारा धर्म स्तंभों का भी निर्माण कराया गया। जिसका उदाहरण चित्तौड़ के दुर्ग में निर्मित स्तंभ है जिसका जैन कला के 11वीं व 12वीं सदी में अत्यधिक विकास हुआ था।

6. अहिंसा

जैन धर्म अहिंसा का सिद्धांत नहीं था किंतु उल्लेखनीय तथ्य यह है कि अहिंसा का प्रचार जितना जैन धर्म के द्वारा किया गया उतना किसी अन्य धर्म के द्वारा नहीं हुआ। जैन धर्म ने अहिंसा पर अत्यधिक बल दिया और महावीर ने पशु पक्षी तथा वनस्पति की हत्या ना करने का अनुरोध अपने अनुयायियों से किया। क्योंकि उनका कहना था कि वनस्पतियों में भी जीव होता है। जैन धर्म में अहिंसा के सिद्धांत व अनेक प्रकार के कारण वैदिक धर्म के अंतर्गत होने वाले यज्ञ में भी बलि प्रथा धीरे–धीरे कम होने लगी। जैन धर्म में अहिंसा के प्रचार में अपना सम्पूर्ण सहयोग दिया।

7. राजनीतिक प्रभाव

जैन धर्म के अहिंसा के सिद्धांत के प्रचार में तत्कालीन राजनीतिक स्थिति में भी प्रभाव पड़ा। जैन धर्म के अनुयायियों द्वारा शांति प्रिय नीति का पालन करने का प्रयास किया जाना इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि जैन साहित्य से तत्कालीन राजनीतिक स्थिति के विषय में अमूल्य जानकारी उपलब्ध होती है।

बौद्ध धर्म का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव :

साहित्य के क्षेत्र में– साहित्य के क्षेत्र में बौद्ध धर्म की देन अविस्मरणीय रही है। बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति के क्षेत्र में बहुत अधिक वृद्धि की। बौद्ध धर्म के लोगों द्वारा लिखी पाली भाषा में लिखित जातक साहित्य से भारत के विभिन्न पहलुओं के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। बौद्ध धर्म के लोगों ने ना केवल पाली भाषा बल्कि संस्कृत भाषा में भी अनेक ग्रंथों की रचनाएं की। इन ग्रंथों से हमें दांत कालीन भारत के विषय में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती हैं।

दर्शन के क्षेत्र में– बौद्ध धर्म ने दर्शन के क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति को बहुत बड़ा योगदान दिया है। जैसे प्रतीत्य–समुत्पाद, शून्यवाद, योगाचार, सौतांत्रिक विज्ञानवाद आदि अनेक विचारधारा ने भारतीयों को प्रभावित किया। लेकिन आज बौद्ध धर्म विलुप्त हो चुकी है लेकिन आज भी बौद्ध धर्म दर्शन का महत्व वैसे ही बना है जैसे पहले था अतः कहा जा सकता है कि दर्शन के क्षेत्र में बौद्ध धर्म की देन अविस्मरणीय है।

धर्म के क्षेत्र में– धर्म के क्षेत्र में बौद्ध धर्म में बहुत कुछ दिया है, जैसे हिंदू धर्म में यज्ञ, बली, कर्मकांड आदि आडंबर के स्थान पर मानवता, स्नेह, सौहार्द की भावना का विकास हुआ।

कला के क्षेत्र में– साहित्य दर्शन और धर्म के साथ–साथ बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति को बहुत कुछ दिया है। जैसे मूर्तिकला, शिल्प कला आदि। गुहा मंदिर स्तंभ स्तूप बौद्ध धर्म की ही देन है। कला के क्षेत्र में अजंता, एलोरा, बाघ आदि सभी बौद्ध काल की स्थापत्य कला और चित्रकलाकृतियां हैं।

सामाजिक जीवन में– सामाजिक क्षेत्र में बौद्ध धर्म ने बहुत अधिक योगदान दिया है। बौद्ध धर्म में सामाजिक समानता स्थापित करने का प्रयास किया और जाति–प्रथा, वर्ग का तिरस्कार किया और शूद्रों एवं स्त्रियों के लिए बौद्ध धर्म के दरवाजे खोल दिए। इसका प्रभाव भारतीय संस्कृति पर भी पड़ा अब हिंदू धर्म में भी शूद्रों और स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन हुआ।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, March 2023
Impact Factor: 7.301

आचार–विचार के क्षेत्र में– सत्य सेवा त्याग परोपकार एवं पेंशन आदि संस्कृतियों प्रारंभ से ही आदर्श रही है लेकिन बौद्ध धर्म के उत्थान के समय भारतीय संस्कृति विलुप्त होने लगी तभी बौद्ध धर्म ने 'दक्ष शील' को अपनाकर भारतीयों में नैतिकता और अच्छे आचरण का मार्ग दिखाया और विलुप्त हो रहे भारतीय संस्कृति को पुनः जीवनदान दिया।

प्रशासनिक क्षेत्र में– राजनीतिक दृष्टि से बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति के पतन का कारण बना, लेकिन भारतीय शासकों में लोक सेवा की भावना को पुनः जाग्रत करने का श्रेय बौद्ध धर्म को ही जाता है। आता है या कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म ने प्रशासन नीति को प्रभावित किया।

संघ व्यवस्था– हिंदू समाज में संघ के संगठन को महत्वपूर्ण दिन मानी जाती है, भिक्षु संघों की स्थापना बौद्ध काल से शुरू हुई। संघ द्वारा धर्म का प्रचार बौद्धों ने किया, इस प्रकार संघ का प्रचार हुआ। पहले हिंदू धर्म में इस प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं थी। इस तरह से धर्म प्रचार हेतु नए तरीके का प्रचलन शुरू हुआ।

गांधी दर्शन का भारतीय संस्कृत पर प्रभाव–

आधुनिक भारतीय चिंतन प्रवाह में गांधी के विचार सार्वकालिक हैं। वे भारतीय उदात्त सामाजिक–सांस्कृतिक विरासत के अग्रदूत भी हैं और सहिष्णुता, उदारता और तेजस्विता के प्रमाणिक तथ्य भी। सत्यशोधक संत भी और शाश्वत सत्य के यथार्थ सामाजिक वैज्ञानिक भी. राजनीति, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, विज्ञान और कला के अद्भुत मनीषी और मानववादी विश्व निर्माण के आदर्श मापदण्ड भी. सम्यक प्रगति मार्ग के चिह्न भी और भारतीय संस्कृति के परम उद्घोषक भी।

गांधी के लिए वेद, पुराण एवं उपनिषद का सारतत्व ही उनका ईश्वर है और बुद्ध, महावीर की करुणा ही उनकी अहिंसा. सत्य, अहिंसा, ब्रहमचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, आस्वाद, अभय, सर्वधर्म समानता, स्वदेशी और समावेशी समाज निर्माण की परिकल्पना ही उनका आदर्श रहा है. गांधी के आदर्श विचार उनके निजी तथा सामाजिक जीवन तक ही सीमित नहीं रहे. उन विचारों को उन्होंने आजादी की लड़ाई से लेकर जीवन के विविध पक्षों में भी आजमाया. तब लोगों का कहना था कि आजादी के लक्ष्य में सत्य और अहिंसा नहीं चलेगी. लेकिन गांधी ने दिखा दिया कि सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर भी आजादी को हासिल किया जा सकता है।

आजादी के आंदोलन के दौरान गांधी ने लोगों को संघर्ष के तीन मंत्र दिए सत्याग्रह, असहयोग और बलिदान. उन्होंने खुद इसे समय की कसौटी पर कसा भी. सत्याग्रह को सत्य के प्रति आग्रह बताया. यानी आदमी को जो सत्य दिखे उस पर पूरी शक्ति और निष्ठा से डटा रहे. बुराई, अन्याय और अत्याचार का किन्हीं भी परिस्थितियों में समर्थन न करे. सत्य और न्याय के लिए प्राणोत्सर्ग करने को बलिदान कहा. अहिंसा के बारे में उनके विचार सनातन भारतीय संस्कृति की प्रतिध्वनि हैं. गांधी पर गीता के उपदेशों का व्यापक असर रहा. वे कहते थे कि हिंसा और कायरता पूर्ण लड़ाई में मैं कायरता की बजाए हिंसा को पसंद करूंगा. मैं किसी कायर को अहिंसा का पाठ नहीं पढ़ा सकता वैसे ही जैसे किसी अंधे को लुभावने दृश्यों की ओर प्रलोभित नहीं किया जा सकता।

उन्होंने अहिंसा को शौर्य का शिखर माना. उन्होंने अहिंसा की स्पष्ट व्याख्या करते हुए कहा कि अहिंसा का अर्थ है ज्ञानपूर्वक कष्ट सहना. उसका अर्थ अन्यायी की इच्छा के आगे दबकर घुटने टेक देना नहीं. उसका अर्थ यह है कि अत्याचारी की इच्छा के विरुद्ध अपनी आत्मा की सारी शक्ति लगा देना. अहिंसा के माध्यम से गांधी ने विश्व को यह भी संदेश दिया कि जीवन के इस नियम के अनुसार चलकर एक अकेला आदमी भी अपने सम्मान, धर्म और आत्मा की रक्षा के लिए साम्राज्य के सम्पूर्ण बल को चुनौती दे सकता है. गांधी के इन विचारों से विश्व की महान विभूतियों ने स्वयं को प्रभावित बताया. आज भी उनके विचार विश्व को उत्प्रेरित कर रहे हैं. लोगों द्वारा उनके अहिंसा और सविनय अवज्ञा जैसे अहिंसात्मक हथियारों को आजमाया जा रहा है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन का यह कथन लोगों की जुबान पर है कि आने वाले समय में लोगों को सहज विश्वास नहीं होगा कि हांड़–मांस का एक ऐसा जीव था जिसने अहिंसा को अपना हथियार बनाया। हिंसा भरे वैश्विक माहौल में गांधी के विचारों की ग्राह्यता बढ़ती जा रही है. जिन अंग्रेजों ने विश्व के चतुर्दिक हिस्सों में यूनियन जैक को लहराया और भारत में गांधी की अहिंसा को चुनौती दी, आज वे भी गांधी के अहिंसात्मक आचरण को अपनाने की बात कर रहे हैं. विश्व का पुलिसमैन कहा जाने वाला अमेरिका जो अपनी धौंस–पट्टी से विश्व समुदाय को आतंकित करता है अब उसे भी लगने लगा है कि गांधी की विचारधारा की राह पकड़कर ही विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है।

सच तो यह है कि अब गांधी के वैचारिक विरोधियों को भी लगने लगा है कि गांधी के बारे में उनकी अवधारणा संकुचित थी, उन्हें विश्वास होने लगा है कि गांधी के नैतिक नियम पहले से कहीं और अधिक प्रासंगिक और प्रभावी हैं और उनका अनुपालन होना चाहिए। गांधी दर्शन का भारतीय समाज पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा या संक्षेप में कह सकते हैं कि गांधी का योगदान निम्नवत है–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, March 2023
Impact Factor: 7.301

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव–

असहयोग आंदोलन के बाद सविनय अवज्ञा आंदोलन हो या उसके बाद फिर से कांग्रेस में हुआ विवाद, भारत छोड़ो आंदोलन से लेकर अंग्रेजों के भारत छोड़ने तक पूरा भारतीय आंदोलन मुख्य रूप से महात्मा गांधी की अगुवाई में ही हुआ. पूना पैक्ट के बाद कुछ साल तक राजनीतिक गतिविधियों में उनकी सीधी उपस्थिति भले ही कुछ कम हो गई क्योंकि वह हरिजन उत्थान जैसे रचनात्मक कामों में लगे हुए थे लेकिन इस वक्त भी राष्ट्रीय आंदोलन पर उन्हीं की छाप थी. आंदोलन के बीच तमाम आपसी मनमुटावों के बीच भी महात्मा गांधी एक ऐसी कड़ी थे जिन्होंने लोगों को जोड़े रखा और बिखराव नहीं होने दिया.
अहिंसात्मक प्रतिरोध का मार्ग–

अहिंसा की सोच हमें विरासत में मिली है। बुद्ध, महावीर जैसे धर्म प्रवर्तक और अशोक जैसे महान शासकों ने अहिंसा और नैतिकता की शिक्षा दी. दिलचस्प बात ये है कि आधुनिक विश्व जबकि प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध का विध्वंस झेल रहा था तब भारत में अहिंसा को अपना हथियार बनाकर आंदोलन चलाया जा रहा था. गांधी के आंदोलन करने की यही विशेषता भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को दुनिया के महानतम संघर्ष में शामिल करती है. गांधी के अहिंसक प्रतिरोध ने अंग्रेजों को ऐसी दुविधा में डाल दिया था कि उनके पास इसका कोई जवाब नहीं था। अंग्रेजों के हथियारों से सुसज्जित सैन्य बल के आगे अहिंसक विरोध कर गांधी ने उनके समस्त विकास को ही चुनौती दे दी थी. मुकाबला दोनों सभ्यताओं के उपकरणों के बीच था जिसमें गांधी की अहिंसा को जीत मिली. अहिंसा के प्रति महात्मा गांधी का अटूट विश्वास था. अपने गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के विचारों को आत्मसात करते हुए महात्मा गांधी का भी मानना था कि 'जितना महान साध्य है उतना ही महान साधन भी होना चाहिए'. यानी कि देश की आजादी एक पवित्र विचार है और उसे पाने के लिए भी उतने पवित्र तरीकों का उपयोग किया जाए जिससे देश का स्वतंत्रता आंदोलन दुनिया के लिए मिसाल बने।

ऐसे समय में जब पूरे विश्व में हिंसा का बोलबाला है, राष्ट्र आपस में उलझ रहे हैं, मानवता खतरे में है, गरीबी, भूखमरी और कुपोषण लोगों को लील रहा है तो गांधी के विचार बरबस प्रासंगिक हो जाते हैं। अब विश्व महसूस भी करने लगा है कि गांधी के बताए रास्ते पर चलकर ही विश्व को नैराश्य, द्वेष और प्रतिहिंसा से बचाया जा सकता है. गांधी के विचार विश्व के लिए इसलिए भी प्रासंगिक हैं कि उन विचारों को उन्होंने स्वयं अपने आचरण में ढालकर सिद्ध किया. उन विचारों को सत्य और अहिंसा की कसौटी पर जांचा–परखा।

भारतीय संस्कृति की बुराई में मिटाने में गांधी का योगदान–

गांधी सिर्फ ब्रिटिश सत्ता से संघर्ष तक सीमित नहीं थे, बल्कि उन्होंने भारतीय सभ्यता को श्रेष्ठता के स्तर तक पहुंचाने के लिए भी महान प्रयास किए. उन्होंने स्वदेशी और चरखे का प्रचार किया, हरिजन उद्धार के लिए आंदोलन चलाया, सालों साल जेल में बिताए, कई सत्याग्रह किए, भारत छोड़ो आंदोलन चलाया और अंग्रेजों के लिए असंभव कर दिया कि वे भारत को अपने अधीन कर सकें. लेकिन इन सभी कामों से भी महान काम उन्होंने किया कि भारत की पवित्र सोच और नैतिक शक्ति के प्रति दुनिया में सम्मान और श्रद्धा का भाव उत्पन्न कर दिया। अगर हम गहराई से देखें तो महात्मा गांधी ने न केवल आजादी की लड़ाई लड़ी बल्कि उन्होंने भारत में व्याप्त रूढ़िवादी और बुरे सामाजिक पहलुओं पर काम करके भारतीय सभ्यता को श्रेष्ठ बनाने की भी कोशिश की. उन्होंने भारतीय सभ्यता के अलग–अलग पक्षों को सम्पूर्णता में प्रस्तुत किया।

समग्र दृष्टि से देखें तो गांधी एक ऐसा आजाद भारत देखना चाहते थे जो वास्तव में 'भारतीय' हो. जिसका अर्थ केवल अंग्रेजों का भारत से चला जाना नहीं था बल्कि भारत का, भारत के रूप में विकसित हो जाना था। भारतीय सभ्यता के प्रति गांधी का झुकाव उपनिवेशवाद के उस वैचारिक आधार को चुनौती देने के लिए थे जिसे रुडयार्ड किपलिंग द्वारा गढ़े मुहावरे 'श्वेत नस्ल का भार (व्हाइट मेन्स बर्डन)' के जरिए उपनिवेश स्थापित करने का वैचारिक आधार प्रदान करने की कोशिश की गई है, जिसका सार है कि चूंकि काले लोग 'असभ्य' होते हैं इसलिए गोरों की ये जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने 'सुशासन' के जरिए उन्हें सभ्य बनाएं. महात्मा गांधी ने इसी वैचारिक श्रेष्ठता को चुनौती दी ताकि अंग्रेज का भारत पर शासन करने के लिए अपने स्वघोषित तथाकथित सुधारवादी औचित्य को आधार प्रदान करने में सफल न हो जाएं. असल में इस तरह से गांधी जी ने उनका पर्दाफाश भी किया कि किस तरह से वो हमारे देश को गुलाम बनाने के लिए हमें ही असभ्य करार दे रहे हैं।

हालांकि, ऐसा नहीं है कि भारतीय सभ्यता की श्रेष्ठता स्थापित करने के क्रम में गांधी ने देश में फैली कुरीतियों और बुराइयों का समर्थन किया हो, बल्कि उन्होंने इन बुराइयों को खत्म करने के लिए भी लंबा संघर्ष किया और अपने प्रयासों से भारतीय सभ्यता को बेहतर बनाने के लिए जरूरी सुधार भी किए. शांतिपूर्ण विद्रोह का मार्ग–

किसी देश का निर्माण किन विचारों और किस तरह के संघर्ष के आधार पर हुआ है वह उस देश का भविष्य भी तय करता है. महात्मा गांधी का अनशन, धरना, शांतिपूर्ण विरोध, हड़ताल और नैतिक बल जैसे संघर्ष के ऐसे अहिंसक लेकिन बहुत ताकतवर तरीकों से स्वतंत्रता आंदोलन में अंग्रेजों से संघर्ष किया जिनका कोई तोड़ उनके पास नहीं था. उस वक्त तक मानवीय

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, March 2023
Impact Factor: 7.301

मूल्यों को लेकर भी दुनिया में विचार मजबूत हो रहे थे ऐसे में खुद ब्रिटेन जो खुद मानवता का पैरोकार होने का दावा ठोकता था वह अगर अपनी ताकत के बल पर अहिंसक आंदोलन को कुचलता तो तत्कालीन विश्व के सामने उसका दोहरा चरित्र भी सामने आने का उसे डर था. उनके इसी डर ने हिंदुस्तानियों को अहिंसक आंदोलन की ताकत का अहसास कराया।

विषमता की समाप्ति का संघर्ष–

उन्होंने कहा कि जब तक समाज में विषमता रहेगी, हिंसा भी रहेगी. हिंसा को खत्म करने के लिए विषमता मिटाना जरूरी है. विषमता के कारण समृद्ध अपनी समृद्धि और गरीब अपनी गरीबी में मारा जाएगा. इसलिए ऐसा स्वराज हासिल करना होगा, जिसमें अमीर–गरीब के बीच खाई न हो. शिक्षा के संबंध में भी उनके विचार स्पष्ट थे. उन्होंने कहा है कि मैं पाश्चात्य संस्कृति का विरोधी नहीं हूं. मैं अपने घर के खिड़की दरवाजों को खुला रखना चाहता हूं जिससे बाहर की स्वच्छ हवा आ सके. लेकिन विदेशी भाषाओं की ऐसी आंधी न आ जाए कि मैं औंधे मुंह गिर पड़ूं। गांधी जी नारी सशक्तीकरण के प्रबल पैरोकार थे. उन्होंने कहा कि जिस देश अथवा समाज में स्त्री का आदर नहीं होता उसे सुसंस्कृत नहीं कहा जा सकता. लेकिन दुर्भाग्य है कि गांधी के ही देश में उनके आदर्श विचारों की कद्र नहीं है. आज के दौर में भारत ही नहीं बल्कि विश्व समुदाय को भी समझना होगा कि उनके सुझाए रास्ते पर चलकर ही एक समृद्ध, सामर्थ्यवान, समतामूलक और सुसंस्कृत विश्व का निर्माण किया जा सकता है।

आज भी हमारे देश में लोग अपनी मांगों को लेकर उतरते हैं तो अपवादों को छोड़कर आमतौर पर शांतिपूर्ण मार्च, धरने और हड़तालों के जरिए सरकार पर दबाव बनाते हैं, अगर हाल समय में भी देखें तो अब से ठीक एक दशक पहले अन्ना हजारे ने महात्मा गांधी की तरह अहिंसक आंदोलन कर देश में सत्ता परिवर्तन की लहर चला दी. हाल ही में किसानों के मुद्दे पर हुए लंबे शांतिपूर्ण आंदोलन ने सरकार को किसान बिल संबंधी अपने फैसले को वापस लेने के लिए मजबूर कर दिया. गांधी ने देश को शांतिपूर्ण आंदोलन की ऐसी विरासत दी है जिसके नैतिक बल के आगे बंदूकें तक कमजोर साबित हो जाती हैं. महात्मा गांधी मजबूरी का नहीं बल्कि मजबूती का नाम थे।

निष्कर्ष–

जैन, बौद्ध तथा गांधी दर्शन के नैतिक मूल्य विभिन्न प्रकार की लौकिक मानवीय समस्याओं के निदान के लिए उत्पन्न हुए, ये तीनों दर्शन तत्कालीन भारतीय समाज की समाजिक, राजनीतिक, नैतिक समस्याओं का समाधान करने के लिए खड़े हुए। एक तरफ जहाँ जैन व बौद्ध दर्शन वैदिक व्यवस्था से उत्पन्न सामाजिक समस्याओं जैसे– जातिवाद, धार्मिक रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, कर्मकांड, मानव की पारलौकिकता पर आस्था, पशुबलि, हिंसा आदि पर सीधा प्रहार कर वैदिक व्यवस्था को चुनौती दिया, वहीं दूसरी ओर 20 वीं सदी में गांधी ने वैदिक मूल्यों को अपने चिंतन का आधार बनाते हुए समकालीन औपनिवेशिक शासन से जन्मी समाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व नैतिक समस्याओं के समाधान करने के लिए जैन व बौद्ध दर्शन के मूल्यों का भी अनुसरण किया। यही कारण है कि तीनो दर्शन में साध्य को लेकर तादात्म्य देखने को मिलता है, किंतु गांधी दर्शन वेदों से प्रेरित, व मूल वैदिक व्यवस्था पर आस्था के चलते उपरोक्त दोनो दर्शन से पर्याप्त वैषम्य भी रखता है। इन तीनो दर्शन में चूँकि लक्ष्य एक ही है– मानव को अधिकाधिक नैतिक बनाना और भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के साथ इन तीनों दर्शन ने मानव की नैतिकता के मार्ग पर लाने का कार्य किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. शर्मा वेदप्रकाश, (2013) : नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत, एलाइड प्रकाशन, लखनऊ ।
[2]. राधाकृष्णन सर्वपल्ली (1923) : भारतीय दर्शन, जार्ज एलन एंड अनविन पब्लिशर लंदन।
[3]. अंबेडकर बी0 आर0 (1957) : द बुद्धा एंड हिज धम्म, सिद्धार्थ कालेज प्रकाशन, मुम्बई।
[4]. जैन विश्व भारती विवि (2001): जैन संस्कृति एवं जीवन मूल्य, जैन विवि प्रकाशन, लाडनू, राजस्थान।
[5]. शर्मा चंद्रधर (1971) : भारतीय दर्शन आलोचना एवं अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, नई दिल्ली।
[6]. श्रीवास्तव के0सी0 (1991) : भारत की संस्कृति तथा कला, यूनाइटेड बुक डिपो।
[7]. राजेद्र बाबू, (2013) : गांधी की देन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
[8]. डॉ. राधाकृष्णन सर्वपल्ली (2015): हमारी संस्कृति एवं सत्य की खोज, हिंद पॉकेट बुक्स, पुनर्मुद्रित।
[9]. डॉ. राधाकृष्णन सर्वपल्ली, गौतम बुद्ध और जीवन दर्शन, चतुर्थ संस्करण।
[10]. सिन्हा प्रो0 हरेन्द्र प्रसाद, (2016) : भारतीय दर्शन की रूपरेखा, बनारसीदास प्रकाशन, नई दिल्ली।
[11]. B.R. Ambedkar, Budhha and his Dharma: Sidhharth Prakashn Bomby

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, March 2023
Impact Factor: 7.301

[12]. लाल, बसन्त कुमार (2006) : समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
[13]. पाण्डेय, प्रो. संगमलाल (1968) : गाँधी का दर्शन, दर्शनपीठ इलाहाबाद,
[14]. नैय्यर सुशीला (2016) : बापू की कारावास की कहानी, सस्ता साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली,
[15]. गांधी, मो. क.(1945) : मेरे समकालीन, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद,।
[16]. गांधी, मो. क. (1945) : ब्रह्मचर्य (भाग–1), नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद
[17]. बंग, ठाकुरदास : महात्मा गांधी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, online edition downoaded from http://www.sssprakashan.com.
[18]. मिश्रा श्रीकान्त :(2018) भारतीय नीतिशास्त्र एक परिचय, श्रीविनायक प्रकाशन आगरा।
[19]. कुमार, अभय (2016) : सत्यनिष्ठा, अभिरुचि एवं नैतिकता, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण
[20]. शर्मा रामशरण (2006): प्राचीन भारत का इतिहास, एन सी आर टी प्रकाशन नई दिल्ली।
[21]. चंद्र विपिन (2016): भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विवि।
[22]. एन सी ई आर टी (2012) – भारतीय समाज।